Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

लोक संस्कृति के तत्व व मैत्रेयी पुष्पा का नारी विमर्श

माधुरी शर्मा : शोध छात्रा, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई

प्रत्येक साहित्यकार अपने लेखन के माध्यम से अपने समय के समाज का चित्र प्रस्तुत करना चाहता है। स्त्री -विमर्श की प्रमुख हस्ताक्षर के रुप में प्रतिष्ठित कथाकार मैत्रेयी पुष्पा ने भी ग्रामीण नारी के जीवन की समस्याओं को उजागर करते हुए, स्त्री जीवन के प्रति समाज की पंरपरागत मानसिकता के विरुध्द एक नयी सोच से हमारा परिचय कराने का साहसिक कार्य किया है। मैत्रेयीजी का औपन्यासिक परिवेश ग्राम्य जीवन से जुड़ा है। लोकोक्तियों और मुहावरों का कलात्मक प्रयोग व बुंदेलखंड ब्रज की बोली भी उनके उपन्यांसो को और सजीव बना देती है। मैत्रेयी जी के उपन्यासों में वर्णित लोकगीत , लोककथाएँ व लोकोत्सव उनकी शिल्प शैली का एक महत्वपूर्ण पहलू माना जाता है। मैत्रेयीजी इन लोकगीतों के जरिये समाज में परिवर्तन की इच्छुक हैं। वास्तव में जिस नारी विमर्श की चर्चा हम आज कर रहे है, उसकी झलक हमारे लोकगीतों में बहुत पहले से ही दिखाई देती है। सामाजिक व पारिवारिक दबाव के कारण स्त्री जब अपने मन की बात खुलकर कह नहीं पाती थी तब संभवत: वह गीतों के माध्यम से अपनी पीड़ा को व्यक्त करती थी।

परिवार व मातृत्व स्त्री जीवन के सबसे महत्वपूर्ण व सुखद पहलू है। परंतु समाज के अधिकांश घरों में पुरुष की केवल यही इच्छा होती है कि स्त्री अपनी समस्त योग्यताओं व इच्छाओं का गला घोंटकर अपने व्यक्तित्व को विवाह व परिवार की बेदी में आहुति के समान समर्पित कर दे। 'हम में से अनेक ने मानवेतर प्राणियों को जाल से निकलने की कोशिश में अपनी जान तक देते देखा है। मनुष्य से हमेशा शहादत की उम्मींद करना उचित नहीं है, लेकिन यह अपेक्षा करना ज्यादती नहीं है कि वह पशुओं से ज्यादा नहीं तो कुछ बेहतर जरुर साबित हो'।-यही कोशिश मैत्रेयी जी की ग्रामीण औरतों में देखने को मिलता है।

'चाक' उपन्यास में वर्णित मंझा रानी व राजा प्रथम की लोककथा इस बात को सिद्ध करती है कि सफल मातृत्व में ही नारी जीवन की सार्थकता माननेवाला यह पुरुष प्रधान समाज जहाँ एक ओर संतति पैदा न कर पाने के कारण स्त्री कों 'बाँझ' की संज्ञा देता है वहीं दुसरी ओर गर्भावस्था जैसी स्थिती में मात्र किसी के कुछ कहने पर उसे देशनिकाला भी दे देता है। मंझा रानी को राजा प्रथम केवल इसलिए राज्य से निकाल देता है क्योंकि उसकी कोख से जन्म

www.gnrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

लेनेवाला पुत्र राजाप्रथम के लिए अनिष्टकारी होने की भविष्य वाणी की गई थी। मंझा रानी राजा से अपना हक माँगना चाहती थी। लेकिन वह कहती है 'जिसने प्रेम के बदले प्रेम नही दिया वह हक क्या देंगा? यही स्वाभिमान मैत्रेयीजी के उपन्यास इदन्नमम की वुकसुमा में भी दिखायी देता है। 'चाक' उपन्यास में श्रीधर का सारंग से यह कहना कि -'तुम्हारे ही बीच से कोई मंझा उठेगी सारंग, जो अपनी मर्जी से अपना बच्चा पैदा करेगी, भले बालक हीसबिरे में जन्में। उसकी कोख का फैसला करनेवाला कोई राजा होगा न मालिक न कोई देवता' स्त्री के मातृत्व को प्रधानता देता है। वर्षो पहले भी असहय प्रसव पीड़ा को सहनेवाली माता में भी इस बात की झुँझलाहट अवश्य होती होगी कि जन्म देनेवाली माँ के अस्तित्व को नकारा क्यों जाता है, तभी वह कहती है-

दर्द हमने सही रहे, पिया के लाल कैसे कहावैं
आओं सास रानी, बैठो पलंग चढ़ि
हमरा न्याय सुनावो, पिया के लाल कैसे कहावैं।

पुत्र जन्म पर गाया जानेवाला एक गीत प्रकार 'सोहर' होता है। एक प्रचलित सोहर के अनुसार एक बाँझ स्त्री घर से निर्बासित होने पर शेरनी के पास जाती है परंतु शेरनी उसे खाने से मना कर देती है, क्योंकी उसे डर लगता है कि उस स्त्री को खाने से कहीं वह भी बाँझ न हो जाय। अंत में वह स्त्री सबको शरण देनवाली धरती माँ के पास जाती है परंतु धरती माता भी उसे शरण नहीं देती कि कहीं वह बंजर न हो जाय। इस प्रकार बाँझ स्त्री कहीं भी ठौर ठिकाना प्राप्त नहीं कर पाती। 'चाक'उपन्यास में मैत्रेयीजी ने मनोहर की बहू (जिरौलीवाली) का वर्णन किया है। माँ बनने का सामर्थ्य न होने के कारण यदि स्त्री-जीवन को व्यर्थ समझा जाने लगता है परन्तु पुरुष की पिता न बन पाने की कमजोरी को समाज में आज भी छिपाया जाता है। स्त्री अगर बाँझ हो तो पुरुष को दूसरा विवाह करने की खुली छूट है। परन्तु मातृत्व सुख के लिए तरसती मनोहर की बहू का पहला गर्भ मनोहर निर्दयता से गिरवाता है। क्योंकि वह जानता है की बच्चा उसका नहीं है। अपनी पत्नीं के विक्षिप्त व्यवहार को 'चुड़ैल' करार देकर ओझा के साथ असे अमानवीय यातनाएं देने में सहयोग करता है। इसी उपन्यास में रेशम का बिना किसी सामाजिक आधार के अपने अवैध बच्चे को जन्म देने का ऐलान समाज कि इस मानसिकताके प्रतिविद्रोह ही है।

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

नारी के लिए मर्यादा व परंपराओं का बंधन भी कितना कठोर था इसकी झलक भी लोकगीतों में मिलती है। एक प्रचलित लोकगीत के अनुसार एक बार सीताजी रामचंद्रजी की बहन के साथ पानी भरने चली। ननंद ने उनसे रावण का चित्र बनाने का आग्रह किया। सीताजी ने उत्तर दिया -

'जो मैं रवना उरैहों, उरे हि दिखाव हूँ
सुनि पैहें बिरना तुम्हार, ते देसवा निकरि है।'

अर्थात यदि तुम्हारे भैया सुन लेंगे कि मैने उनके शत्रू और स्वंय को हरकर ले जानेवाले रावण का चित्र बनाया तो उन्हें मेरे चरित्र पर संदेह हो जाएगा और वे मुझे देश निकाला दे देंगे। मैत्रेयीजी की रचनाओं में नारी पात्र इस प्रकार की मानसिक चिंता से उपर है। अपने जीवन को लेकर उन्हें किसी पुरुष रुपी सुरक्षा कवच व संरक्षण की आवश्यकता नहीं है। 'इदन्नमम' की मंदा व कुसुमा, 'चाक' की सारंग नैनी, इत्यादी नारी पात्र नैसर्गिक प्रेम की उदात्त सत्ता को नि:संकोच स्वीकार करते है'।

'चाक' उपन्यास में चंदना की कथा का वर्णन मिलता है। जिसमें कथा के अंत में चंदना का प्रेमी व पति दोनों ही जीवित रहते है परंतु चंदना को मार दिया जाता है। मैत्रेयीजी स्त्री के प्रेम को लेकर समाज की सोच के प्रति चिंतित हैं। उनका स्त्री-विमर्श, पुरुष वर्चस्ववादी समाज के उस रवैये का विरोधी है। जहाँ समान कृत्य के लिए स्त्री और पुरुष से अलग-अलग व्यवहार किया जाता है। प्रेम यदि स्त्री के लिए अपराध है तो पुरुष के लिए भी होना चाहिए। 'पगला गई है भगवती' कहानी की भागो अनुसुइया के पिता को छिपकर पत्थर मारती है। प्रेम करने की सजा के रुप में अनुसुइया को उसी के पिता द्वारा जहर देकर मार दिया गया था और आज उसी के छोटे भाई के अंतर्जातीय विवाह का जश्न मनाया जा रहा था। भागो के हृदय का आक्रोश उस समस्त स्त्री समाज के हृदयका आक्रोश है, जो अपने जीवन में इस प्रकार का पक्षपाती व्यवहार देखते हैं, परंतु विरोध नहीं कर पाते।

मैत्रेयीजी के कथा साहित्य में मंझा रानी या चंदना की कथा मात्र उनके उपन्यासों में ग्राम्य संस्कृती का चित्र प्रस्तुत करने के लिए नहीं आए हैं, बल्कि इनके जरिये स्त्री वर्ग को अपनी लक्ष्मण रेखाओं को लाँघने के भयानक परिणामों से डराने की साजिश का पर्दाफाश किया गया है। मैत्रेयीजी की सृजित नारियाँ, समाज के इस पुराने समीकरण को उलट देती है। अपने मन व इच्छाओं को महत्व

www.gnrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-I, February 2014

देते हुए वे सामाजिक वर्जनाओं को मानने से इंकार करती हैं। लोकगीतों व लोककथाओं को ग्रामीण नारी के जीवन से जोड़कर, उसमें स्त्री विमर्श के नये आयाम प्रस्तुत करने का मैत्रेयीजी का प्रयास सचमुच सराहनीय रहा है।

संदर्भ-

१) सोचो तो संभव है - संपादक - राजकिशोर -पृष्ठ १५६
२) चाक - मैत्रेयी पुष्पा -पृष्ठ ८५
३) वही -पृष्ठ २१४
४) लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या - श्रीकृष्णदास -पृष्ठ १०७

www.ghrws.in